रेने देकार्त (Rene Descartes)

डॉ. विजय कुमार
दर्शनशास्त्र विभाग
लंगट सिंह कालेज, मुजफ्फरपुर

रेने देकार्त का जन्म फ्रांस के तुरेन नामक नगर में ई. सन. 1596 में हुआ था। इनके पिता का नाम जोखिम देकार्त था। रेने देकार्त शरीर से निर्बल किन्तु कुशाग्र बुद्धि के थे। उनकी शिक्षा दस वर्ष की अवस्था में लॉ फ्लेश जैसुइट नामक कॉलेज में ई. सन. 1606 में आरम्भ हुई। जहाँ उन्होंने छः साल तक मानविकी तथा तीन साल तक दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया। देकार्त को गणित में विशेष रुचि थी। स्थापित गणितज्ञों में रेने देकार्त का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। ई. सन. 1650 में उनका देहावसान हो गया।

देकार्त की मुख्य रचनाएं

1. Discourse on Method
2. The Meditation
3. The Principles of Philosophy
4. The Passions of the Soul

आधुनिक दर्शन का जनक

देकार्त को आधुनिक दर्शन का जनक माना जाता है। दर्शन जगत् के प्राचीन काल में सौन्दर्य और कला की प्रधानता थी। मध्ययुग में आकर दर्शन धर्म का दास बन गया। मध्ययुग के दार्शनिक प्रायः पोप और पादरी थे जो धार्मिक मान्यताओं में विश्वास करते थे और विश्वास को ही ज्ञान का साधन मानते थे। धर्म में कोई तर्क-वितर्क नहीं होता बल्कि मात्र आस्था और विश्वास लेकर चलता है। मध्ययुग का दर्शन प्रायः ऐसा ही था। अरस्तू के विचारों को तोड़-मरोड़ कर जनता के समक्ष पेश किया जाने लगा था। देकार्त ने कहा – चाहे हम प्लेटो तथा अरस्तू के समस्त तर्कों का अध्ययन कर ले परन्तु हम कभी भी दार्शनिक नहीं बन पायेंगे। चूँकि देकार्त एक उच्च कोटि के गणितज्ञ भी थे, अतः उन्होंने कहा कि एक ऐसी दार्शनिक विधि होनी चाहिए जो पूर्णतः क्रमबद्ध तथा ठोस, निश्चित एवं सार्वभौम सत्य की उपलब्धि में सहायक हो। चूँकि देकार्त को विज्ञान और गणित से विशेष लगाव था इसलिए वे दार्शनिक सिद्धान्तों को भी गणित के सिद्धान्तों की भाँति निश्चित एवं सार्वभौम बनाना चाहते थे। देकार्त को जिन प्रवृत्तियों के कारण आधुनिक दर्शन का जनक कहा जाता है उन प्रवृत्तियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

बुद्धि की प्रधानता– देकार्त कट्टर बुद्धिवादी दार्शनिक हैं। उन्होंने अपनी दर्शन पद्धत्ति को दो भागों में बाँटा– निर्विकल्प अतीन्द्रिय अनुभूति और सविकल्प तर्क। देकार्त ने सविकल्प तर्क को अपनाया जो निगमनात्मक है। लेकिन ऐसा नहीं है कि देकार्त ने आगमनात्मक प्रणाली की अवहेलना की बल्कि उन्होंने कहा कि आगमन की सत्यता के लिए निगमन का होना आवश्यक है।

गणितीय पद्धत्ति– देकार्त ने दर्शन को विज्ञान की ओर लाने का प्रयास किया। जैसा कि हम सब जानते हैं कि गणित की विधि निगमनात्मक होती है जिसके अन्तर्गत किसी दिए हुए निश्चित एवं स्वयंसिद्ध नियमों से निष्कर्ष निकाले जाते हैं। इसीलिए देकार्त ने निश्चिय किया कि दर्शन के क्षेत्र में भी गणितीय विधि का प्रयोग होना चाहिए। अतः देकार्त ने धर्म की दासता से दर्शन को मुक्त कर विज्ञान की ओर ले जाने का प्रयास किया।

देकार्त ने जिन दार्शनिक समस्याओं का विवेचन किया, कालान्तर में भी अन्य दार्शनिकों ने उसी का अनुकरण किया। देकार्त ने प्रत्येक बात को बुद्धि एवं तर्क से निश्चित करने का प्रयास किया।

सन्देह-विधि

देकार्त ने अपनी विधि को अन्वेषण की विधि कहा है। किसी भी ठोस तथ्यों की स्थापना के लिए यह आवश्यक है कि हमलोग विश्व की सारी वस्तुओं, घटनाओं एवं तथ्यों पर क्रमबद्ध रूप से संशय करें यदि विश्व की समस्त वस्तुओं पर संशय करते जाए तो निश्चय ही हम एक ऐसे तथ्य पर पहुँचकर रूक जायेंगे जिससे आगे संशय नहीं किया जा सकता। विश्व की सभी वस्तुएँ संदेहास्पद है। देकार्त का मानना है कि कोई भी ज्ञान असंदिग्ध नहीं हो सकता। इस तथ्य को प्रमाणित करने के लिए उन्होंने सर्वप्रथम ज्ञान पर संदेह करना प्रारम्भ किया–

१. **इन्द्रिय ज्ञान संशयात्मक है**– इन्द्रिय ज्ञान मात्र वस्तु विशेष का ज्ञान देती है जिनमें निश्चितता और सार्वभौमिकता का अभाव रहता है जिसे विश्वसनीय नहीं कहा जा सकता। जैसे– जब हम सुनसान और अंधेरी रात में कहीं जा रहे होते हैं, तो कभी–कभी ऐसा आभास होता है कि पीछे से कोई आवाज दे रहा है या फिर कोई पीछा कर रहा है, जबकि वास्तविकता नहीं होती। जब हम कहते है कि प्रत्यक्ष ज्ञान असंदिग्ध होता है उसके लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती, किन्तु हमें बालू देखकर जल का बोध होता है। या फिर दोपहर के समय तेज धूप में कुछ दूर पर सडक पर पानी होने का आभास होता है।
२. **शारीरिक क्रिया पर संदेह**– हम ऐसा कह सकते हैं कि हमारे शरीर की सभी क्रियाएं विश्वसनीय होती हैं और इन पर किसी प्रकार की आशंका नहीं हो सकती है, क्योंकि अपने शरीर की क्रियाओं का हमें बोध होता रहता है।

जैसे हम अभी बैठकर लिख रहे हैं यह असंदिग्ध है, क्योंकि अपने हाथों द्वारा लिखे जाने की इन्द्रियानुभूति हो रही है। यदि इन्द्रियानुभूति हो रही है इस पर संदेह नहीं किया जा सकता। इसके उत्तर में देकार्त का कहना है कि स्वप्नावस्था में भी इस प्रकार की अनेक अनुभूतियाँ होती हैं, जो उस समय अकाट्य प्रतीत होती हैं पर वास्तव में यह भ्रम होता है।

३. **गणित की मान्यता पर संदेह**– गणित की ऐसी मान्यता है कि २+२ = ४ होते हैं। जो हर स्थिति में ४ ही होती हैं, ३ या ५ नहीं हो सकते। और इसी आधार पर हम कठिन से कठिन जोड़–घटाव आदि करते हैं। देकार्त कहते हैं कि यह नियम सभी स्थितियों में लागू नहीं होता। जब हम २ बूंद पानी को २ बूंद पानी के साथ मिला देते हैं तो यह कोई आवश्यक नहीं कि २ बूंद और २ बूंद पानी मिलकर ४ बूंद ही बने। क्योंकि बूंदों की संख्या उसकी मात्रा पर निर्भर करती है। यदि बूंदों की मात्रा अधिक होगी तो ३ बूंद बनेंगे और यदि बूंदों की मात्रा कम होगी तो ५ बूंद भी बन सकते हैं। अतः देकार्त कहते हैं कि २ और २ मिलकर ४ होते हैं यह मानने के लिए कोई शैतान या अज्ञात शक्ति हमें विवश करती है।

इस प्रकार देकार्त ने संसार की सारी वस्तुओं, तथ्यों, घटनाओं आदि पर सन्देह किया। उन्होंने सभी ज्ञान को संदेहास्पद बताया। अब प्रश्न उठता है कि क्या ऐसा कोई ज्ञान संभव नहीं जिसे पूर्णतः ठोस, निश्चित तथा संशय से परे कहा जा सके? इसका उत्तर देते हुए देकार्त ने कहा कि सभी कुछ संदेहयुक्त हो सकता है, किन्तु संदेह होने की जो प्रक्रिया हो रही है उस पर संदेह नहीं किया जा सकता (That I doubt, cannot be doubted)। क्योंकि यदि संदेह की क्रिया गलत हो जाएगी तो जो संदेह किए जयेंगे सब के सब गलत हो जायेंगे। अतः संदेह करने की क्रिया सत्य है, संदेह मुक्त है। साथ ही जब संदेह की क्रिया हो रही है तो निश्चय ही कोई संदेही भी होगा, क्योंकि बिना संदेही के संदेह की प्रक्रिया नहीं हो सकती। अतः संदेह की प्रक्रिया से स्पष्ट हो जाता है कि संदेहकर्ता का अस्तित्व है, जो असंदिग्ध है और जिस पर संदेह नहीं किया जा सकता। जैसे ही मैंने यह सोचा कि सबकुछ मिथ्या है, वैसे ही यह अनिवार्यतः सिद्ध हो गया कि 'मैं' जिसने यह सोचा अवश्य ही कुछ है। यह कुछ और नहीं बल्कि 'मैं हूँ', 'मेरी आत्मा' है। सोचना या चिन्तन करना आत्मा का धर्म है। चूँकि मैं हूँ इसलिए मेरी सत्ता है। यदि मैं क्षण भर के लिए भी सोचना स्थगित करता हूँ तो मुझे विश्वास करने का कोई अधिकार नहीं है कि उस क्षण मेरी सत्ता है या नहीं।

इस तरह देकार्त ने अपनी इस खोज को एक सूत्र में निरूपित करते हुए कहा– 'COGITO ERGO SUM' जिसका अंग्रेजी रूपान्तरण है– 'I THINK THEREFORE, I AM'. or I THINK THEREFORE, I EXIST. अर्थात् मैं सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ या मेरी सत्ता है।

इस प्रकार देकार्त आत्मा की स्वत:सिद्धता को प्रमाणित करते हुए उसकी स्वप्रकाशता एवं ज्ञातृत्व को प्रतिपादित करते हैं।

आधुनिक पाश्चात्य दर्शन में जो बौद्धिकता, वैज्ञानिकता तथा स्वतंत्रता की प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं वह सब देकार्त की देन है। कालान्तर के विद्वानों ने भी उन्हीं का अनुकरण किया। देकार्त ने प्रत्येक बात को बुद्धि एवं तर्क से निश्चित करने का प्रयास किया। जिसकी झलक अन्य बुद्धिवादी दार्शनिकों में ही नहीं बल्कि अनुभववादी दार्शनिकों में भी देखने को मिलती है। यही कारण है कि देकार्त को आधुनिक दर्शन का जनक कहा जाता है।

●